CORPORATE OFFICE
Delhi Office
706 Ground Floor Dr. Mukherjee Nagar Near Batra Cinema Delhi – 110009
Noida Office
Basement C-32 Noida Sector-2 Uttar Pradesh 201301

Yojna IAS
yojnaias.com
योजना है तो सफलता है
website : www.yojnaias.com
Contact No. : +91 8595390705

Date : 29 दिसंबर 2022

वीर बाल दिवस

संदर्भ- हाल ही में गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत को याद करते हुए वीर बाल दिवस मनाया गया। इस दिन गुरू के पुत्रों के त्याग और बलिदान को याद किया जाता है।

गुरु गोविंद सिंह और उनके पुत्र-

- गुरु गोविंद सिंह को सिख पंथ के दसवे गुरु के रूप में जाना जाता है।
- गुरु गोविंद सिंह एक महान चिंतक, आध्यात्मिक गुरु व एक योद्धा थे।
- वर्ष 1699 में बैसाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की।
- इनका जन्म गुरु तेग बहादुर व माता गुजरी के घर में हुआ। अतः गुरु की गद्दी इन्हें विरासत में मिली थी।
- गुरु गोविंद सिंह ने गुरु ग्रंथ साहिब का पुनः संकलन किया तथा उन्हें गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया।
- गुरु गोविंद साहिब के चार पुत्र थे- जुझारु सिंह, जोरावर सिंह, फतेह सिंह, अजित सिंह। प्रारंभिक तीन पुत्र उनकी पत्नी जीतो और अजित सिंह गोविंद सिंह जी की दूसरी पत्नी सुंदरी के पुत्र थे।

वीर बाल दिवस

- वीर बाल दिवस गोविंद सिंह जी के बच्चों व मां द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदान को चिह्नित करता है।
- शहीदी जोर मेला या शहीदी सभा फतेहगढ़ साहिब में मनाया जाता है।
- केंद्र सरकार की घोषणा के अनुसार प्रति वर्ष 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह के छोटे बेटों (जोरावर सिंह, फतेह सिंह) व मां के शहादत को याद करने के लिए वीर बाल दिवस मनाया जाएगा।

शहादत घटनाक्रम (आनंदपुर का युद्ध)

मुगलों की सेना व वर्तमान हिमांचल के पहाड़ी राजाओं द्वारा आनंदपुर साहिब पर हमले के कारण गुरु गोविंद सिंह के पुत्र व मां शहादत को प्राप्त हुई।

आनंदपुर के युद्ध की पृष्ठभूमि- पहाड़ी क्षेत्रों में गुरु गोविंद सिंह जी ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर रहे थे, जैसे अपनी सेना को सुदृढ़ करना, खालसा पंथ की स्थापना करना आदि। इसे मुगल साम्राज्य व अन्य पहाड़ी राज्य अपनी स्थिति के लिए एक खतरे की तरह देख रहे थे। जिसके कारण पहाड़ी राजाओं के साथ गुरु गोविंद सिंह जी का युद्ध होता रहता था।

बारंबार युद्धों के चलते मुगलों व पहाड़ीराजाओं ने गुरु गोविंद सिंह को एक प्रस्ताव दिया कि यदि वे आनंदपुर छोड़ दें तो आगामी युद्ध नहीं होंगें। प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए गुरू ने 20 दिसंबर को आनंदपुर छोड़ दिया। विरोधियों ने प्रस्ताव या शपथपत्र का स्वयं ही पालन नहीं किया और गुरु गोविंद सिंह जी पर सरसा नदी के तट पर आक्रमण कर दिया।

सरसा या सिरसा नदी में बाढ़ आ गई और कई सिक्ख सैनिक बाढ़ में बह गए। और गुरु गोविंद सिंह जी का परिवार बिछड़ गया, इसी स्थल को आज विछोरा साहिब के रूप में जाना जाता है। उनकी पत्नी साहिब कौर व साथी मणि सिंह मालवा की ओर चल दिए। गुरु व उनके दो पुत्र अजित सिंह व जुझारु सिंह चमकौर साहिब की ओर बढ़े। उनकी माता व दो छोटे पुत्र सरहंद की ओर बिखर गए।

गुरू गोविंद साहिब ने चमकौर साहिब में चमकौर का ऐतिहासिक युद्ध लड़ा। साहिबजादे अजीत सिंह व जुझारू सिंह ने इस युद्ध में 22 दिसंबर 1704 को अपने प्राणों की आहुति दे दी।

गुरू गोविंद साहिब की माता अपने पोतों के साथ ग्राम खीरी में स्थानीय निवासी गंगू के घर में आश्रित ली हुई थी। तत्कालीन मुगल गवर्नर द्वारा घोषित इनाम के कारण गंगू ने गुजरी कौर को सरहिंद के नवाब वजीर खां को सौंप दिया। परिणाम स्वरूप गुजरी देवी, जोरावर सिंह व फतेह सिंह को ठण्डा बुर्ज में कैद कर लिया।

फतेह सिंह व जोरावर सिंह जो क्रमशः 7 व 9 वर्ष के थे को दरबार में कई तरह के लालच देकर इस्लाम में परिवर्तित होने को कहा गया। साहिबजादों ने धर्म परिवर्तन व आत्मसमर्पण दोनों से इंकार कर दिया। वजीर खां ने उन्हें 26 दिसंबर 1704 जिंदा दीवार पर को चिनवा दिया, इसकी खबर सुनकर गुजरी देवी की भी मृत्यु हो गई। कुछ वर्षों के बाद गुरु गद्दी के संरक्षक बंदा बहादुर ने सरहिंद पर अधिकार कर साहिबजादों की मृत्यु का बदला लिया।

गुंजन जोशी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

संदर्भ- हाल ही में भारत की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना 138वां स्थापना वर्ष मनाया। कांग्रेस का इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम इतिहास का अभिन्न अंग है। वर्तमान में भारत जोड़ों यात्रा कांग्रेस की एक नई पहल है।

कांग्रेस की स्थापना-

वर्तमान में एक राजनीतिक दल के रूप में विख्यात कांग्रेस का गठन 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हुआ। जिनमें ह्यूम, दादाभाई नौरोजी, दीनशावाचा, फिरोजशाह मेहता, केटी तैलंग जैसे नेता शामिल थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक महासचिव एलन एक्टीवियन ह्यूम(सेवानिवृत्त सिविल सेवा अधिकारी) थे जिन्होंने व्योमेश चंद्र बैनर्जी को अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन से पूर्व देश में कई राजनीतिक संगठन अलग अलग स्थानो पर कार्य र रहे थे। इस समय देश के नेताओं को एक संगठन की आवश्यकता थी जो पूरे देश में राजनीतिक गतिविधियों के कार्यक्रम तैयार करने के लिए मंच तैयार करे। इस तरह के संघ बनाने की योजना विभिन्न नेताओं ने शुरु कर दी, 1883 में अखिल भारतीय सम्मेलन कलकत्ता मेंआयोजित किया गया जिसमें भारत के प्रमुख कस्बों के नेताओं ने भाग लिया। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के घोर आलोचक ह्यूम ने 1883 के सम्मेलन की सोच को आगे बढ़ाते हुए 28 दिसम्बर 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।

प्रारंभिक प्रकृति व उद्देश्य-

कांग्रेस की स्थापना के समय कांग्रेस के प्रतिनिधि मध्यमवर्गीय परिवारों से थे, कांग्रेस के अधिकतर नेताओं ने विदेशों में शिक्षा प्राप्त कर राजनीति में प्रवेश कर रहे थे, वे ब्रिटिश न्याय की भावना से भलीभांति अवगत थे और उदारवादी राजनीति में विश्वास रखते थे। जिसके अनुसार सरकार के समक्ष संयमित व उदार मांगें रखी जाती थी। इस समय कांग्रेस का उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति न होकर भारतीयों के पक्ष में ब्रिटिश राजनीति को प्रभावित करना था। जिसे **सुरक्षा वॉल्व** के रूप में भी जाना जाता है।

उद्देश्य

- विभिन्न तत्वों का एक राष्ट्र के रूप में विलय और राष्ट्र का उत्थान
- इंग्लैण्ड व भारत के मध्य संघ का समेकन
- भारत के श्रमिकों के बीच एकता को बढ़ावा देना।
- नस्ल, पंथ व आपसी पूर्वाग्रह के लिए काम करना।
- इंग्लैण्ड व भारत में एक साथ सार्वजनिक सिविल सेवा परीक्षा आयोजित करना।

कांग्रेस का विभाजन व एकता –

19 वी शताब्दी के अंत में कांग्रेस में एक नई विचारधारा के नेताओं का आगमन होने लगा। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविंदो घोष आदि नेता कांग्रेस की उदारवादी नीति से निराश थे और क्रांतिकारी परिवर्तन करने वाले **गरमपंथी विचारधारा** चाहते थे। जो तत्कालीन अकाल(1876,1895), बंगाल विभाजन(1905) और सरकार की नीतियों से त्रस्त जनजीवन को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिला सके। इस प्रकार कांग्रेस की नीतियों व स्वतंत्रता संग्राम के लक्ष्यों को लेकर निरंतर मतभेद के चलते सूरत अधिवेशन 1907 में कांग्रेस का विभाजन हो गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता रास बिहारी बोष ने की थी।

1916 में लखनऊ में कांग्रेस का सम्मेलन हुआ जिसमें गरम दल भी कांग्रेस में पुनः शामिल हो गया। इस सम्मेलन को हिंदू मुस्लिम एकता का पर्याय भी माना जाता है क्योंकि इस सम्मेलन में कांग्रेस व मुस्लिम लीग ने समान मांगें सरकार के सामने रखी। इसी दौर में गांधीजी का प्रवेश भी भारतीय राजनीति व कांग्रेस में हुआ।

लखनऊ समझौते में कांग्रेस(नरम व गरम दल) व मुस्लिम लीग के संयुक्त उद्देश्य

- साम्प्रदायिक मतदाता
- प्रत्यक्ष चुनाव
- भारतीय परिषद का उन्मूलन
- विधान परिषद का उन्मूलन

स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के समय भी कांग्रेस के विभाजन व संयुक्त होने का क्रम जारी रहा। जो इंदिरा गांधी समय भी चलता रहा। वर्तमान में भारत जोड़ो यात्रा कांग्रेस को संयुक्त व मजबूत करने के लिए एक कदम है। जवाहरलाल नेहरू ने भी देश के पहले आम चुनाव के समय 40000 किमी की यात्रा की थी और लगभग साढ़े तीन करोड़ लोगों को सीधे सम्बोधित किया था।

गुंजन जोशी

Yojna IAS योजना है तो सफलता है yojnaias.com